

नाभादास



जन्म	:	1570 अनुमानित ।
निधन	:	अज्ञात, (1600 तक वर्तमान) ।
जन्म-स्थान	:	सांप्रदायिक मान्यता के अनुसार दक्षिण भारत में, शैशत्र में पिता की मृत्यु और अकाल के कारण माता के साथ जयपुर (राजस्थान) में प्रवास । दुर्योगवश माता से भी बिछोह ।
शिक्षा	:	गुरु और प्रतिपालक की देख-रेख में स्वाध्याय, सत्संग द्वारा ज्ञानार्जन ।
अभिरुचि	:	लोकभ्रमण, भगवद्भक्ति, काव्य रचना, वैष्णव दर्शन-चिंतन में विशेष रुचि ।
दीक्षागुरु	:	स्वामी अग्रदास (अग्रअली), जो स्वामी रामानंद की शिष्य परंपरा के प्रसिद्ध कवि थे ।
स्थाई निवास	:	वृंदावन ।
कृतियाँ	:	भक्तमाल (रचनाकाल 1585-1596 निर्धारित) अष्टयाम (ब्रजभाषा गद्य में) अष्टयाम ('रामचरितमानस' की दोहा-चौपाई शैली में) रामचरित संबंधी प्रकीर्ण पदों का संग्रह ।
विशेष	:	कवि नाभादास की पारिवारिक-सामाजिक-पृष्ठभूमि अधिकतर विद्वानों के मुताबिक दलित वर्ग की थी ।

नाभादास सगुणोपासक रामभक्त कवि थे । उनकी भक्ति प्रचलित रामभक्ति से थोड़ी भिन्न थी । उसमें मर्यादा के स्थान पर माधुर्यभाव का पुट था । वे गोस्वामी तुलसीदास के समकालीन थे और स्वामी रामानंद की ही शिष्य परंपरा के संत कृष्ण दास पयहारी के प्रशिष्य और भक्तकवि अग्रदास के शिष्य थे । इस तरह वे वैष्णवों के एक निश्चित संप्रदाय में दीक्षित थे, किंतु उनकी सोच और मान्यताओं में किसी तरह की संकीर्णता नहीं थी । पक्षपात, दुराग्रह या कट्टरता से वे पूर्णतया मुक्त एक भावुक, सहृदय, विवेकसंपन्न सच्चे वैष्णव थे । प्रसिद्ध कृति 'भक्तमाल' भक्तकवि नाभादास के शील, सोच और मानस का निर्मल दर्पण है । अविचल भगवद्भक्ति, भक्तचरित्र और भक्तों की स्मृतियाँ; नाभादास का अनुभव-सर्वस्व यही है । गार्हस्थ्य, सामाजिक-सांसारिक जीवन, विस्तृत और जटिल मानव संबंध इत्यादि का उन्हें अनुभव नहीं था । वे एक विरक्त जीवन जीते आए संत थे । स्पष्टतः उनके अनुभव के उस छोटे दायरे में ही उन्होंने अपनी अभिरुचि, ज्ञान, विवेक, भाव-प्रसार आदि के द्वारा प्रतिभा का प्रकर्ष उपस्थित कर दिया है । 'भक्तमाल' जिसकी आगे परंपरा चल पड़ी, यह प्रमाणित करता है ।

'भक्तमाल', जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है, भक्त चरित्रों की माला है । उसमें नाभादास के पूर्ववर्ती और समवर्ती वैष्णव भक्तों के चरित वर्णित हैं । भक्तों के चयन में धर्म-संप्रदाय-जाति-लिंग और निर्गुण-सगुण आदि के विभेदकारी आग्रहों को महत्त्व न देते हुए केवल वैष्णवता को ही ध्यान में रखा गया है । यह वैष्णव भक्ति के अनुरूप ही है जिसमें

“जाति-पाँति पूछै नहिं कोई, हरि को भजै सो हरि के होई” जैसा क्रांतिकारी उद्घोष है। ‘भक्तमाल’ में वर्णित सभी भक्त कवि नहीं हैं, किंतु भक्तकवियों की संख्या कम नहीं है। संपूर्ण ‘भक्तमाल’ छप्पय छंद में निबद्ध है। छप्पय एक छंद है जो छह पंक्तियों का गेय पद होता है। इसमें 316 छप्पयों में 200 भक्तों के चरित वर्णित हैं। ये छप्पय नाभादास की तलस्पर्शिणी अंतर्दृष्टि, मर्मग्राहिणी प्रज्ञा, सारग्राही चिंतन और विदग्ध भाषा-शैली के नमूने हैं। इनके पीछे कवि के विशाल अध्ययन, सूक्ष्म पर्यवेक्षण, प्रदीर्घ मनन और अंतरंग अनुशीलन छिपे हुए हैं। ये छप्पय नाभादास की सहृदय आलोचनात्मक प्रतिभा के भी विशेष प्रमाण हैं। अनेक छप्पयों द्वारा मध्यकाल में ही आधुनिक अर्थों में हिंदी आलोचना का नाभादास ने न केवल बीजवपन किया था बल्कि सांकेतिक रूप में अग्रिम पथ-निर्देश भी कर दिया था। रीतिकाल के तथाकथित शास्त्रीय काव्यचिंतन को देखते हुए नाभादास का क्रांतिकारी महत्त्व स्पष्ट हो जाता है।

यहाँ कबीर और सूर पर लिखे गए छप्पय ‘भक्तमाल’ से संकलित हैं। वैष्णव भक्ति की नितांत भिन्न दो शाखाओं के इन महान भक्तकवियों पर लिखे गए ये छंद ऊपर कही गई बातों के सटीक प्रमाण हैं। इन कवियों से संबंधित अब तक के संपूर्ण अध्ययन-विवेचन के सार-सूत्र इन छंदों में कैसे पूर्वकथित हैं यह देखना विस्मयकारी और प्रीतिकर है। ऐसा प्रतीत होता है, गोया आगे की शतियों में इन कवियों के अध्ययन-विवेचन की रूपरेखा जैसे तय कर दी गई हो।



“नाभादास ने भक्तों के परिचय में जिस समास शैली का परिचय दिया है, वह उनके गंभीर चिंतन-मनन का परिणाम है। जिन भक्तों का परिचय उन्होंने लिखा है उनकी रचना-शैली, काव्यकला, भक्ति पद्धति एवं अन्य विशिष्टताओं आदि को प्रायः एक ही छप्पय में कूट-कूटकर समाविष्ट कर दिया है।

— विजयेंद्र स्नातक

भक्तमाल मध्ययुग के वैष्णव आंदोलन की रूपरेखा समझने के लिए सबसे अधिक प्रामाणिक और महत्त्वपूर्ण सामग्री प्रस्तुत करता है।

— माताप्रसाद गुप्त

छप्पय

कबीर

भगति विमुख जे धर्म सो सब अधर्म करि गए ।
योग यज्ञ व्रत दान भजन बिनु तुच्छ दिखाए ॥
हिंदू तुरक प्रमान रमैनी सबदी साखी ।
पक्षपात नहिं बचन सबहिके हितकी भाषी ॥
आरूढ़ दशा है जगत पै, मुख देखी नाहीं भनी ।
कबीर कानि राखी नहीं, वर्णाश्रम षट दर्शनी ।

सूरदास

उक्ति चौज अनुप्रास वर्ण अस्थिति अतिभारी ।
वचन प्रीति निर्वही अर्थ अद्भुत तुकधारी ॥
प्रतिबिंबित दिवि दृष्टि हृदय हरि लीला भासी ।
जन्म कर्म गुण रूप सबहि रसना परकासी ॥
विमल बुद्धि हो तासुकी, जो यह गुण श्रवननि धरै ।
सूर कवित सुनि कौन कवि, जो नहिं शिरचालन करै ।

अभ्यास

छप्पय के साथ

1. नाभादास ने छप्पय में कबीर की किन विशेषताओं का उल्लेख किया है ? उनकी क्रम से सूची बनाइए ।
2. 'मुख देखी नहीं भनी' का क्या अर्थ है ? कबीर पर यह कैसे लागू होता है ?
3. सूर के काव्य की किन विशेषताओं का उल्लेख कवि ने किया है ?
4. अर्थ स्पष्ट करें -
(क) सूर कवित्त सुनि कौन कवि, जो नहिं शिरचालन करै ।
(ख) भगति विमुख जे धर्म सो सब अधर्म करि गाए ।
5. 'पक्षपात नहीं वचन सबहि के हित की भाषी ।' इस पंक्ति में कबीर के किस गुण का परिचय दिया गया है ?
6. कविता में तुक का क्या महत्त्व है ? इन छप्पयों के संदर्भ में स्पष्ट करें ।
7. 'कबीर कानि राखी नहीं' से क्या तात्पर्य है ?
8. कबीर ने भक्ति को कितना महत्त्व दिया ?

छप्पय के आस-पास

1. नाभादास के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के संबंध में विशेष जानकारी एकत्र करें ।
2. कबीर एक क्रांतिकारी कवि थे । आप दिगंत (भाग - 1) में इनके पद पढ़ चुके हैं । नाभादास द्वारा बताई गई विशेषताओं का साम्य उन पदों में ढूँढ़ें । इसी तरह सूर के पदों के साथ भी इन विशेषताओं का मिलान करें ।
3. मीरा ने भी 'कुल की कानि' की परवाह नहीं की । कबीर और मीरा में समानताएँ और असमानताएँ क्या हैं ? विचार करते हुए बताएँ ।

भाषा की बात

1. निम्नलिखित शब्दों के विपरीतार्थक शब्द लिखें -
तुच्छ, हित, पक्षपात, गुण, उक्ति
2. वाक्य प्रयोग द्वारा इन शब्दों का लिंग निर्णय करें-
वचन, मुख्य, यज्ञ, अर्थ, कवि, बुद्धि
3. विमल में 'वि' उपसर्ग है । इस उपसर्ग से पाँच अन्य शब्द बनाएँ ।
4. पठित छप्पय से अनुप्रास अलंकार के उदाहरण चुनें ।
5. 'रसना' का पर्यायवाची शब्द लिखें ।

शब्द निधि

आरूढ़	:	सवार	भासी	:	आभासित हुई, प्रत्यक्ष हुई
दशाह्न	:	दशा में होकर	रसना	:	जिह्वा
षट्दर्शनी	:	षट्दर्शन, भारत के प्रसिद्ध छह दर्शन	परकासी	:	प्रकाशित किया
चौज	:	चमत्कार	तासुकी	:	उसकी
भनी	:	वर्णन की	श्रवणनि	:	कानों में
दिवि	:	दिव्य	शिरचालन	:	सिर डुलाना